प्रेस विज्ञप्ति

आचार्य महाप्रज्ञ चातुर्मास व्यवस्था समिति

सरदारशहर 331 401

Email : terapanthpr@gmail.com * Fax : 01564-220 233

आज होगा आचार्य महाश्रमण का तेरापंथ भवन में चातुर्मासिक प्रवेश

सरदारशहर 15 जुलाई , 2010

आचार्य महाश्रमण आज (16 जुलाई) प्रात: 8 बजे श्रीसमवसरण से विहार कर नवनिर्मित तेरापंथ भवन में चातुर्मासिक प्रवेश करेंगे। उक्त जानकारी देते हुए चातुर्मास व्यवस्था समिति के महामंत्री रतन दूगड़ ने बताया कि आचार्य महाश्रमण के मंगल प्रवेश के साथ ही दूगड़ विद्यालय सम्मुख नवनिर्मित विशाल तेरापंथ भवन का उद्घाटन भी हो जायेगा। इस भवन में चार मास तक आचार्य महाश्रमण का प्रवास होगा। इस दौरान अनेक राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय कार्यक्रम आयोजित होंगे।

रतन दूगड़ ने बताया कि श्रीसमवसरण से आचार्य महाश्रमण जुलूस के साथ विहार करेंगे। इस जुलूस में तेरापंथ सभा, तेरापंथ महिला मण्डल, तेरापंथ युवक परिषद, तेरापंथ कन्या मण्डल, तेरापंथ किशोर मण्डल, अणुव्रत समिति आदि अनेक संस्थाओं के कार्यकर्त्ता अपने अपने गणवेश में सम्मलित होंगे। इसके साथ ज्ञानशाला के बालक-बालिकाएं भी पंक्तिबद्ध चलेंगे। जुलूस मैन मार्केट, दूगड़ विद्यालय रोड आदि शहर के मुख्य मार्गों से होते हुए तेरापंथ भवन पहुंचेगा। दूगड़ ने बताया कि चातुर्मास व्यवस्था समिति ने सभी व्यवस्थाओं को अंतिम रूप दे दिया है। प्रवेश के पश्चात कायक्रम आयोजित होगा और उसके पश्चात सामुहिक भोज भी आयोजित होगा। 16 जुलाई रात्रि 8 बजे ही धम्म जागरणा का आयोजन होगा जिसमें धर्मसंघ की चर्चित गायिका मुंबई प्रवासी मिनाक्षी भूतोड़िया की विशेष प्रस्तुतियां होगी। 17 जुलाई को प्रात: आचार्य महाश्रमण का नागरिक अभिनन्दन समारोह आयोजित होगा। इसमें शहर की सभी जैन-अजैन संस्थाओं के द्वारा अभिनन्दन किया जायेगा।

आत्मविश्वास को जगाएं : आचार्य महाश्रमण

सरदारशहर 15 जुलाई , 2010

बौद्ध साहित्य के महान ग्रंथ धम्मपद का उल्लेख करते हुए आचार्यश्री महाश्रमण ने श्रीसमवसरण में अपने दैनिक प्रवचन में कहां कि दुनिया में अनेक तरह के फूल होते हैं जिसमें कमल का फ्ल प्रसिद्ध है, जिसमें शील होता है उसमें सुगंध भी नीरंतर बनी रहती है। फूलों में सुगंध अल्प होती है शीलवान की महिमा अलग होती है वह महिमा साधना पर आधारित होती है, जिसकी साधना उच्च कोटि की होती है उसकी महिमा आत्मा का उद्धार करने वाली होती है। जब तक सम्यक् दर्शन नहीं होता तो पूर्ण चारित्र हो नहीं सकता इसलिए सम्यकत्व

आवश्यक है, दृष्टिकोण को विशाल बनाएं, चिंतन का परिवर्तन से आदमी सुखी भी बन जाता है और दु:खी भी बन जाता है व्यक्ति का दृष्टिकोण कैसा है वह उस दृष्टिकोण पर निर्भर है।

आचार्यश्री महाश्रमण ने कहा कि जिस तरह से पंखा घूम-घूमकर हवा देता है उसी तरह संत भी घूम-घूमकर ताप हरण करते हैं, ताप के द्वारा संत में शील की सुगंध होती है। मनुष्य अपने लक्ष्य का निर्धारण करे गति बनी रहे, चींटी धीरे-धीरे चलती है किंतु वह निरंतर चलती है तो वह अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लेती है किंतु तेज चलने वाला गरुड़ नहीं चलता है तो वह लक्ष्य तक पहुंच नहीं सकता। मनुष्य भी निरंतर आलस्य, मोह को परास्त कर गति निरंतर करता रहे। आदमी का एक लक्ष्य हो कि कैसे संयम का विकास हो इस दिशा में निरंतर चिंतन रहे तो अपना जीवन सुखी बना सकता है।

आचार्यश्री महाश्रमण ने फूलों और भंवरे का उदाहरण प्रस्तुत करते हुए कहा कि जिस तरह एक भंवरा फूलों का थोड़ा-थोड़ा रस ग्रहण कर उड़ जाता है वैसे ही साधु घरों में थोड़ी-थोड़ी गोचरी (भिक्षा) लेता है जिससे गृहस्थों पर भी बाझ नहीं पड़ता है।

मनुष्य जीवन में परिस्थितियां आ जाती है, परिस्थितियों में चिंतन उदात्त बने, उन्होंने यह भो कहा कि विद्यार्थी फैल हो जाते हैं तो वे तनाव में आ जाते हैं उनके लिए यह आवश्यक है कि वह जिस तरह से झरना निरंतर गतिशील रहता है उसी तरह उसे निरंतर आत्मविश्वास के साथ प्रयास करना चाहिए, जिससे वह सफल हो सकता है।

इस अवसर पर सूरजमल गोठी, सम्पतमल गधैइया, आचार्य महाप्रज्ञ चातुर्मास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष सुमतिचन्द गोठी ने पूज्यवरों साधु-संतों के श्रीसमवरण प्रवास व गोठीजी की हवेली के प्रवास करने पर आभार प्रकट करते हुए अपने भावनाएं व्यक्त की। कार्यक्रम का संचालन मुनि मोहजीतकुमार ने किया।

शीतल बरड़िया
(मीडिया संयोजक)